

REET MAINS | अध्यापक भर्ती



सम्पूर्ण GK निःशुल्क बैच

थार मरुस्थल

विशेषताएँ और वर्गीकरण

Class 8



Concept + याद करने की गारंटी





धार मरुस्थल की विशेषताएँ

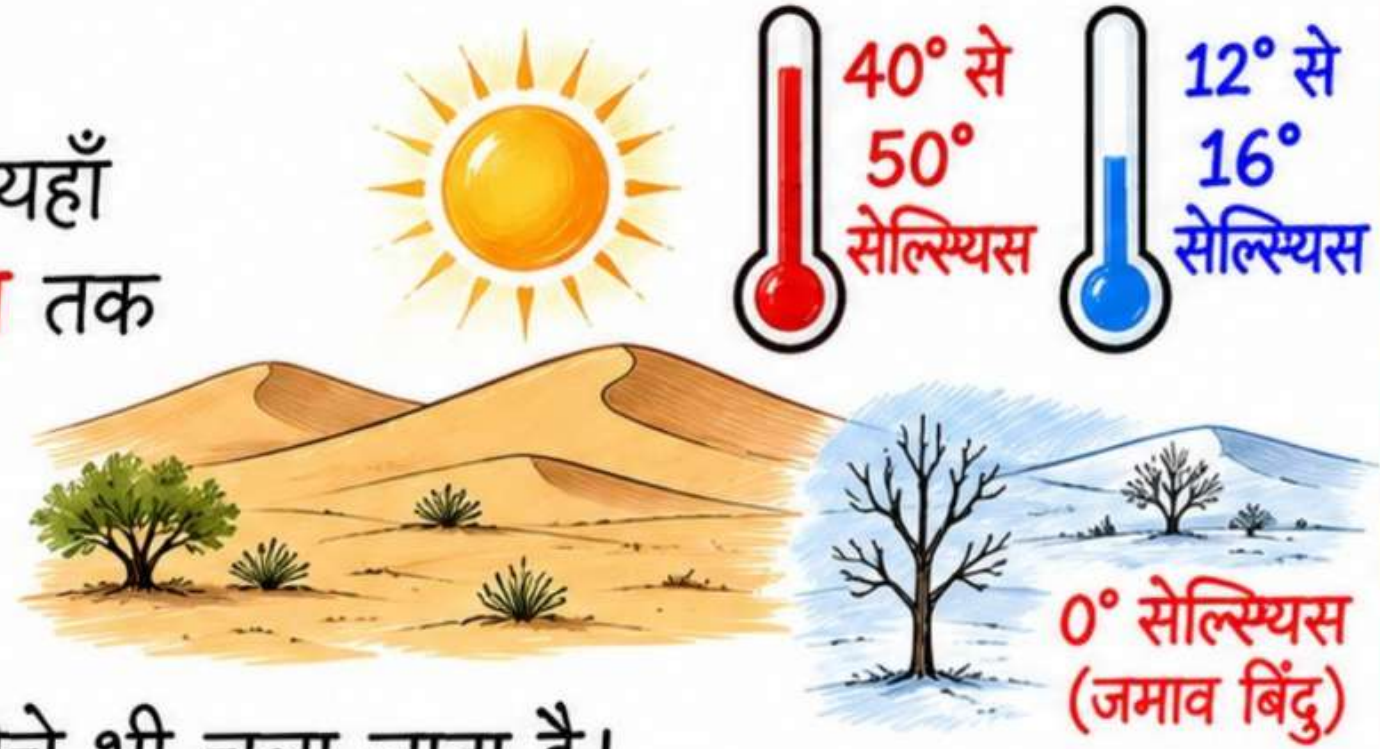
- * विश्व का सबसे युवा मरुस्थल।
- * ग्रेट पैलियो आर्कटिक अफ्रीका मरुस्थल का पूर्वी भाग
- * सबसे धनी सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल।
- * यह विश्व का 17 वां सबसे बड़ा मरुस्थल, उपोष्ण मरुस्थलों में 9 वां स्थान।
- * सर्वाधिक आबादी और सर्वाधिक जनघनत्व (103 व्यक्ति/कि०मी०)
- * सर्वाधिक पशु घनत्व और वनस्पति वाला मरुस्थल।
- * अपतटीय क्षेत्रों के बाद सर्वाधिक पैटर्नलिचम का भंडार।
- * 10 C.M. वर्षा रेखा राजस्थान में इसकी पश्चिमी सीमा है।

- * देश के 142 डेजर्ट ब्लॉक में से 85 राजस्थान में स्थित हैं
- * माइक्रोनिस्ट चट्टानें | गोटवाना क्रम की चट्टानें।
- * सर्वाधिक खारे पानी की झीलें।
- * ध्यात गांव (जैसलमेर) → 20 करोड़ वर्ष पूर्व के जीवाश्म मिले हैं जिससे
 यहाँ मांसाहारी डायनासोर होने के प्रमाण मिलते हैं
 ↳ दुर्लभतम पादप जीवाश्म भी मिले हैं
- * गुलधरा: (जैसलमेर) → प्लीस्टोसीन काल के मुख्य कंकाल मिले हैं
- * World Power House (विश्व शक्ति गृह) → सर्वाधिक ^{घर} ऊर्जा संसाधन संग्रहित हैं

थार मरुस्थल की सामान्य विशेषताएँ एवं भौगोलिक स्थिति

1. जलवायु एवं तापमान :

- यह भारत के अत्यधिक उष्ण (गर्म) प्रदेशों में आता है। यहाँ गर्मियों में अधिकांशतः तापमान 40° से 50° सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जबकि शीत ऋतु में औसत तापमान 12° से 16° सेल्सियस रहता है। चूरु और झुंझुनूं जैसे ज़िलों में शीत ऋतु में तापमान कभी-कभी 0° सेल्सियस (जमाव बिंदु) तक या उससे नीचे भी चला जाता है।



2. क्षेत्रफल एवं जनसंख्या : 61.11% | 40%

- यह राजस्थान का सर्वाधिक क्षेत्रफल और सर्वाधिक जनसंख्या वाला भौतिक भू-भाग है।



3. अरावली से संबंध :

- यह क्षेत्र अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित है।

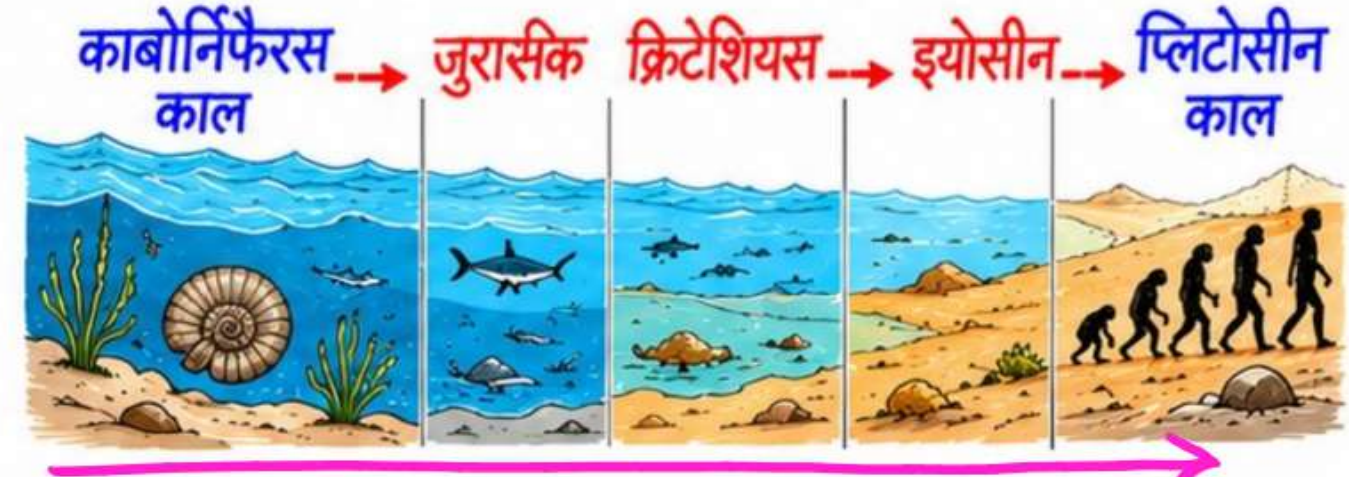


उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक साक्ष्य

1.

भू-गर्भिक इतिहास :

→ इसका उद्भव भू-गर्भिक प्रमाणों के अनुसार काबोर्निफैरस काल में पश्चिमी राजस्थान में विस्तृत समुद्र से हुआ। जुरासिक, क्रिटेशियस और इयोसीन युगों में यह क्षेत्र समुद्र के नीचे था, जो धीरे-धीरे पीछे खिसकता गया। इसके बाद प्लिटोसीन काल में यहाँ मानव का प्रादुर्भाव हुआ।



2.

समुद्री अवशेष :

→ जुरासिक काल और उसके बाद के समुद्री तलछटों के जमाव के प्रमाण जैसलमेर व बाड़मेर में मिलते हैं।



समुद्री जीवों के अवशेष



जैसलमेर व बाड़मेर

3.

टेथिस महासागर का भाग :

→ राजस्थान का अधिकांश पश्चिमी और उत्तरी-पश्चिमी भाग टेथिस महासागर का ही अवशेष हैं, जो बाद में हिमालय की नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से पट गया। सांभर, डीडवाना, पचपदरा और लूणकरणसर जैसी खारे पानी की झीलें इसी टेथिस सागर के अवशेष के रूप में आज भी मौजूद हैं।



नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी



सांभर



डीडवाना



पचपदरा

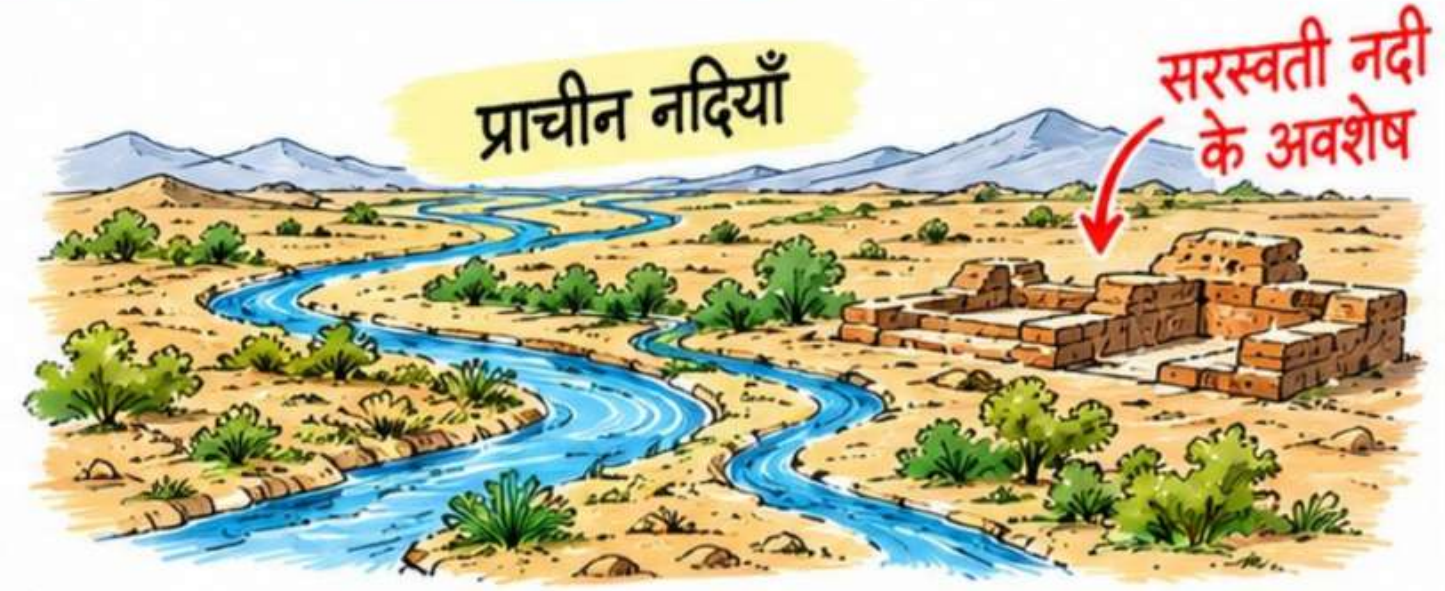


लूणकरणसर

प्राचीन नदियाँ एवं मरुस्थल का संबंध

1. प्राचीन नदियाँ :

- भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार यह क्षेत्र पहले अत्यधिक उपजाऊ था और यहाँ बड़ी-बड़ी नदियाँ बहती थीं। यहाँ सरस्वती नदी के अवशेष मिलना इसका सबसे बड़ा प्रमाण है।



2. मरुस्थल का संबंध :

- यह मरुस्थल ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ्रीकी मरुस्थल का ही पूर्वी भाग है।
- इस क्षेत्र की चट्टानें अवसादी (Sedimentary) हैं, जिनमें कोयला और पेट्रोलियम पाया जाता है।
- थार की टर्शियरी कालीन चट्टानों में तेल व गैस के प्रचुर भंडार (गुड़ामलानी, जैसलमेर, बाड़मेर-सांचौर) मिले हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र का व्यावसायिक महत्व बढ़ गया है।



कोयला



पेट्रोलियम



तेल व गैस

वर्षा रेखाएँ (Rainfall Lines)

1. 10 सेमी वर्षा रेखा :

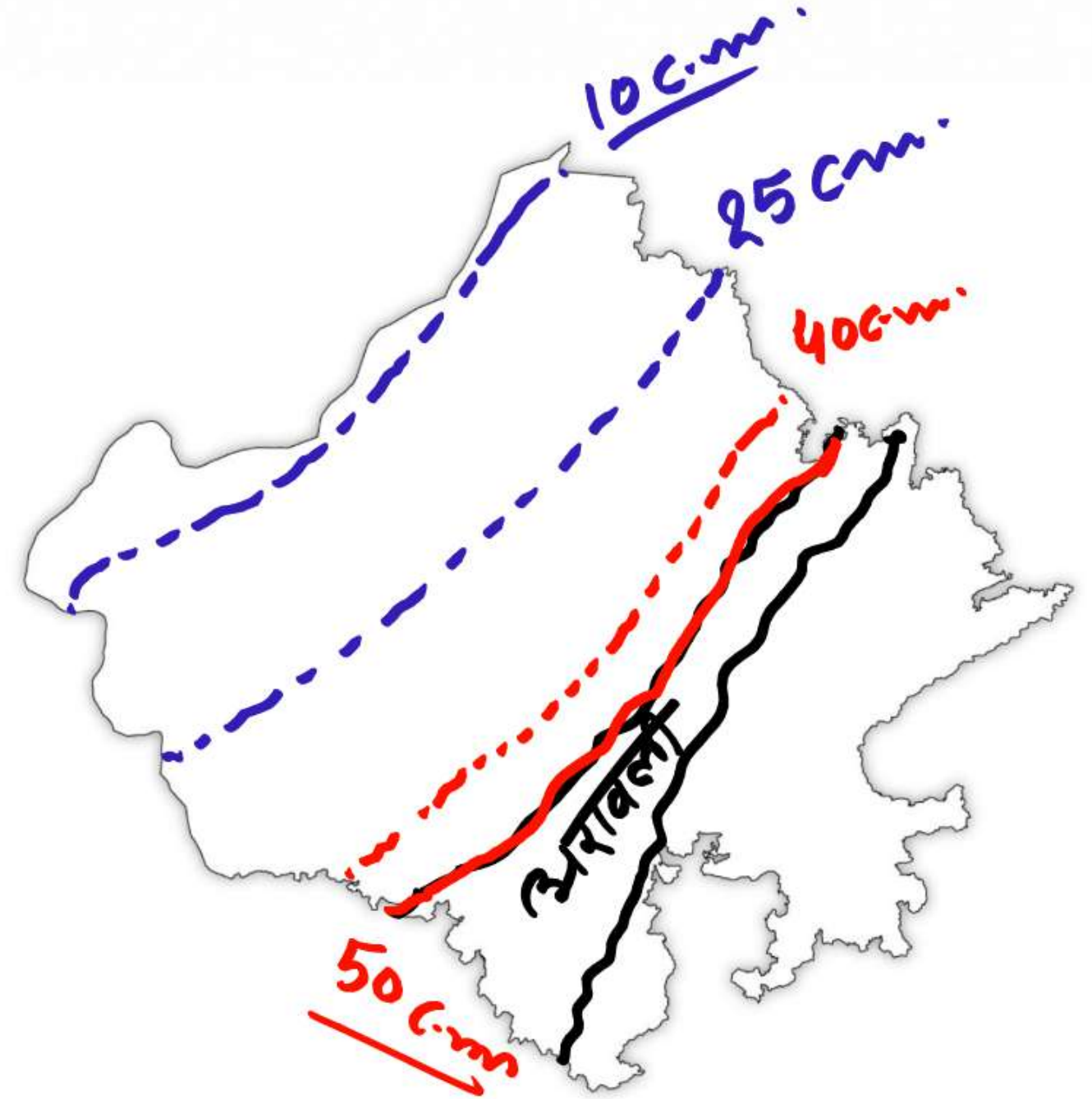
- यह रेखा मरुस्थल की पश्चिमी सीमा को तय करती है और भारत-पाक सीमा के समानांतर चलती है। यह राजस्थान में मुख्य रूप से जैसलमेर से गुजरती है।

2. 25 सेमी वर्षा रेखा :

- यह रेखा उत्तर-पश्चिमी मरुस्थल को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है। इसके पश्चिम में 'शुष्क रेतीला मरुस्थल' और पूर्व में 'अर्द्धशुष्क मरुस्थल' स्थित है।

3. 50 सेमी वर्षा रेखा :

- यह रेखा राजस्थान को लगभग दो समान भागों में विभाजित करती है। यह अरावली को पश्चिमी सीमा और पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश को पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है।



मरुस्थलीकरण एवं ऐतिहासिक संदर्भ

1. रेगिस्तान का मार्च :

- ➔ मरुस्थल के आगे बढ़ने या उसके विस्तार की प्रक्रिया को 'रेगिस्तान का मार्च' या 'मरुस्थलीकरण' कहते हैं।
- ➔ इसके लिए जैसलमेर का नाचना गाँव विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- वर्तमान में थार के मरुस्थल का विस्तार हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की ओर लगातार हो रहा है।



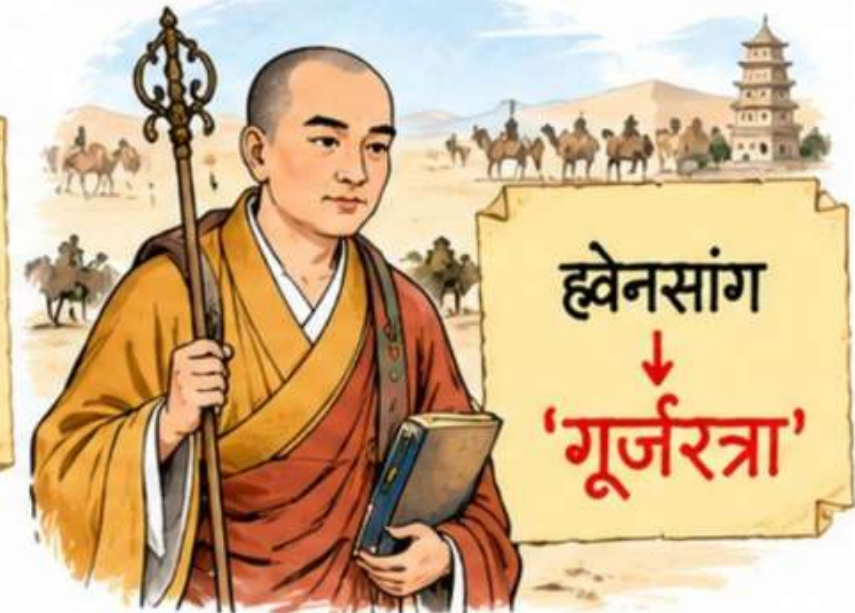
राजस्थान (थार मरुस्थल) → हरियाणा → पंजाब → उत्तर प्रदेश → मध्य प्रदेश

2. प्रमुख कथन व नाम :

- डॉ. ईश्वरीप्रसाद ने इस मरुस्थलीय प्रदेश को "रुक्ष क्षेत्र" कहा है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस क्षेत्र को "गूर्जरत्रा" नाम दिया था।



डॉ. ईश्वरीप्रसाद
↓
'रुक्ष क्षेत्र'



ह्वेनसांग
↓
'गूर्जरत्रा'

थार के मरुस्थल का विशेष महत्व

1. मानसून का आकर्षण :

- ग्रीष्मकाल में यह क्षेत्र भारत में सबसे निम्न वायुदाब का केंद्र बनता है। तापमान अधिक होने से वायुदाब निम्न हो जाता है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में मानसूनी हवाओं को अपनी ओर तीव्रता से आकर्षित करता है। इसलिए यह भारत के मानसून को सक्रिय करने में बड़ी भूमिका निभाता है।



2. जलवायु :

- यहाँ की जलवायु बहुत शुष्क है। गर्मियों में रेतीली आँधियाँ चलती हैं। दिन में तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है, जबकि रातें बहुत ठंडी (तापमान कम) हो जाती हैं।



मृदा (Soil) एवं भू-आकृतियाँ

1. मिट्टी के प्रकार :

- इस प्रदेश में मुख्य रूप से **बायुढ़ मिट्टियाँ** (हवा द्वारा बहाकर लाई गई रेत) पाई जाती हैं।
- **घग्घर प्रदेश** में **जलोढ़ मृदा** मिलती है, इसी प्रकार **लूनी बेसिन** में भी **जलोढ़ मृदा** पाई जाती है।
- यहाँ की मिट्टी में जैविक पदार्थों (**ह्यूमस**) की कमी और **लवणता** की अधिकता होती है।



मृदा की प्रमुख विशेषताएँ

- जैविक पदार्थों (**ह्यूमस**) की कमी
- **लवणता** की अधिकता

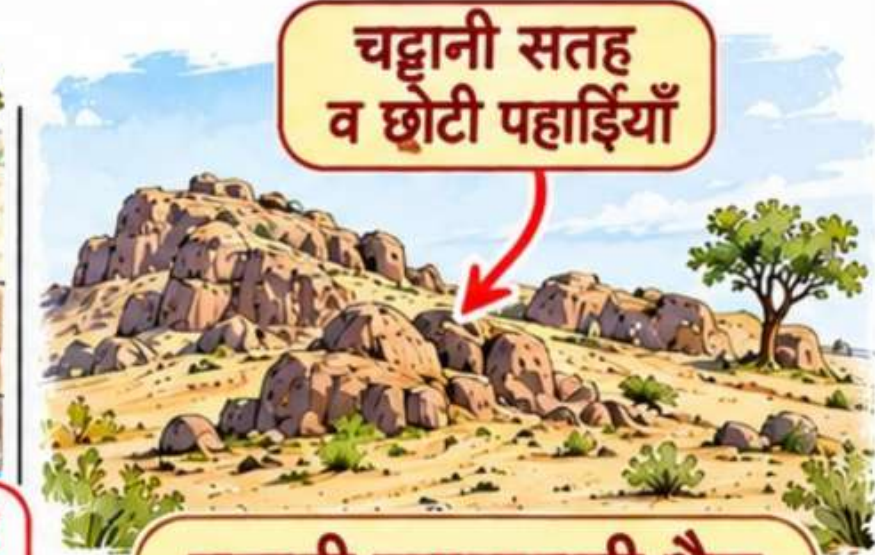


2. धरातलीय स्वरूप :

- यहाँ **वर्षा बहुत कम** और **अनिश्चित** होती है।
- भूमिगत जल अत्यधिक गहराई पर मिलता है, जो अधिकांशतः **खारा** होता है।
- इस क्षेत्र में कहीं-कहीं **चट्टानी सतह** और **छोटी-छोटी पहाड़ियाँ** (जैसे **मलानी ज्वालामुखी शैल** तथा **विंध्यन बालू पत्थर**) भी देखने को मिलती हैं, जिससे धरातल **ऊबड़-खाबड़** हो जाता है।



अधिकतर खारा जल



मलानी ज्वालामुखी शैल विंध्यन बालू पत्थर

मरुस्थल का वर्गीकरण

➔ थार के मरुस्थल को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: **रेतीला मरुस्थल** और **पथरीला मरुस्थल**। कुल मरुस्थलीय क्षेत्र के लगभग **85 प्रतिशत भाग** पर रेतीले मरुस्थल का विस्तार है।

रेतीला मरुस्थल

कुल मरुस्थलीय क्षेत्र के लगभग
85 प्रतिशत भाग पर विस्तार

पथरीला मरुस्थल

➔ पश्चिमी राजस्थान में **विंध्य महासमूह** के समकालीन शैलों के विच्छेदन से **दो पृथक बेसिन** बने हैं (**पारीक, 1984 के अनुसार**):

1. नागौर बेसिन :

- यह **जोधपुर** से प्रारंभ होकर पश्चिम में **पोकरण** तक तथा उत्तर में **बीकानेर-गंगानगर** तक विस्तृत है।
- इस बेसिन के शैल-समूह **मलानी आग्नेय शैलों** पर टिके (विच्छेदित) हैं।



मलानी आग्नेय शैलें

2. बिरमानिया बेसिन :

- यह **जैसलमेर** के दक्षिण में स्थित एक छोटा बेसिन है।
- इसके शैल-समूह नागौर बेसिन के समकालीन ही हैं।



(**मारवाड़ महासमूह** के अंतर्गत इन दोनों बेसिनों के विच्छेदित शैल-समूहों को वर्गीकृत किया गया है।)

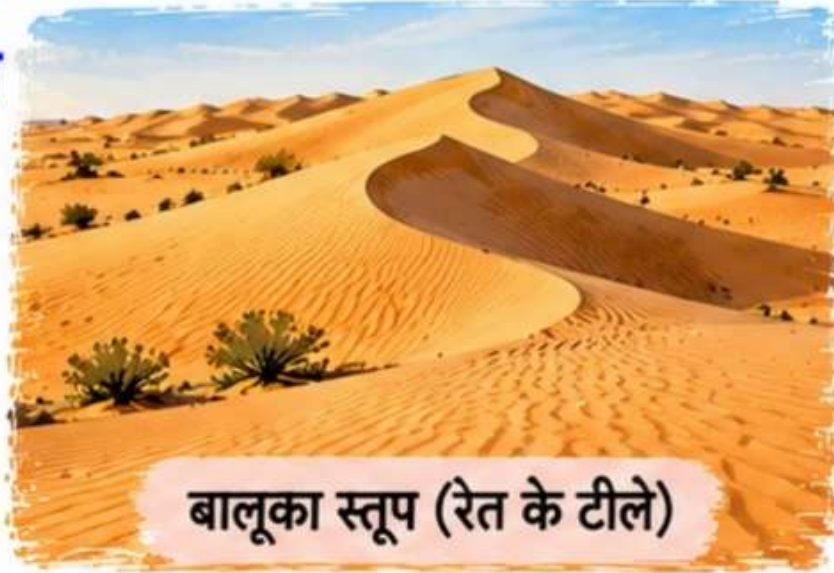
उच्चावच के आधार पर मरुस्थल के 4 उप-प्रदेश (Relief Features)

➔ धरातल की बनावट (उच्चावच) के आधार पर इस मरुस्थलीय प्रदेश को 4 प्रमुख उप-भागों में बांटा गया है:

1. महान मरुस्थल (Great Desert)

- यह भारत-पाकिस्तान सीमा के सहारे फैला हुआ है और पूरी तरह से बालूका स्तूपों (रेत के टीलों) से ढका हुआ है।

इर्ग

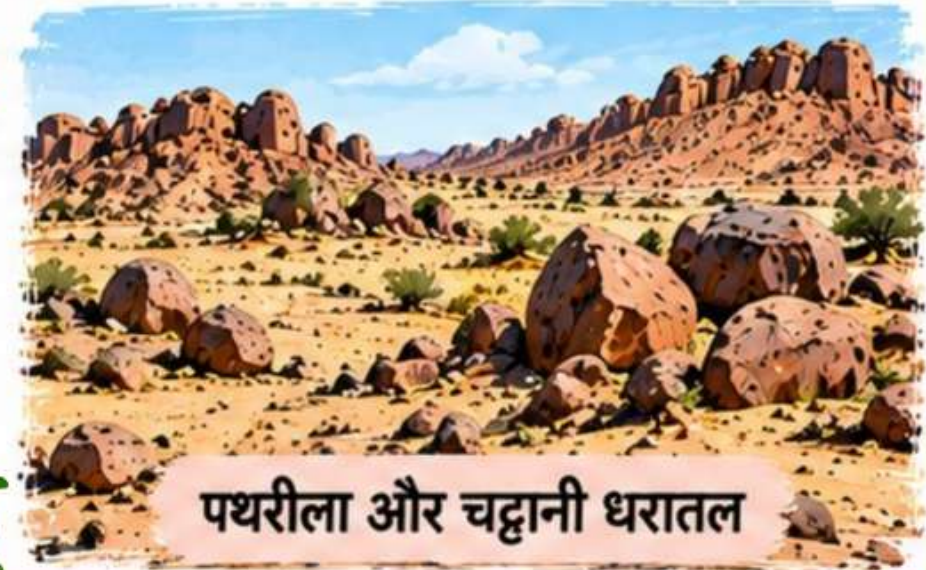


बालूका स्तूप (रेत के टीले)

2. चट्टानी प्रदेश (Rocky Desert)

- यह बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर जिलों में विस्तृत है, जहाँ रेत के बजाय पथरीला और चट्टानी धरातल पाया जाता है।

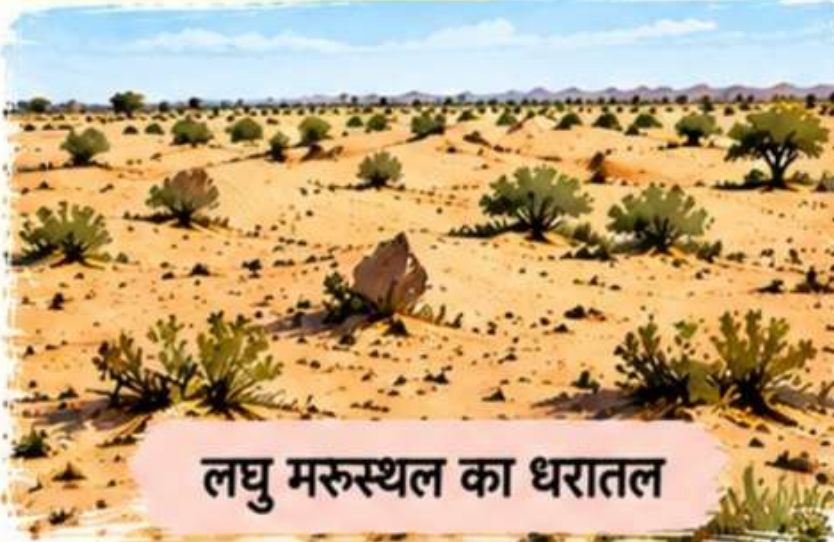
हम्माद



पथरीला और चट्टानी धरातल

3. लघु मरुस्थल (Little Desert)

- यह चट्टानी प्रदेश के पूर्व में स्थित है, जो कच्छ की खाड़ी (गुजरात) से लेकर बीकानेर तक एक संकरी पट्टी के रूप में फैला हुआ है।

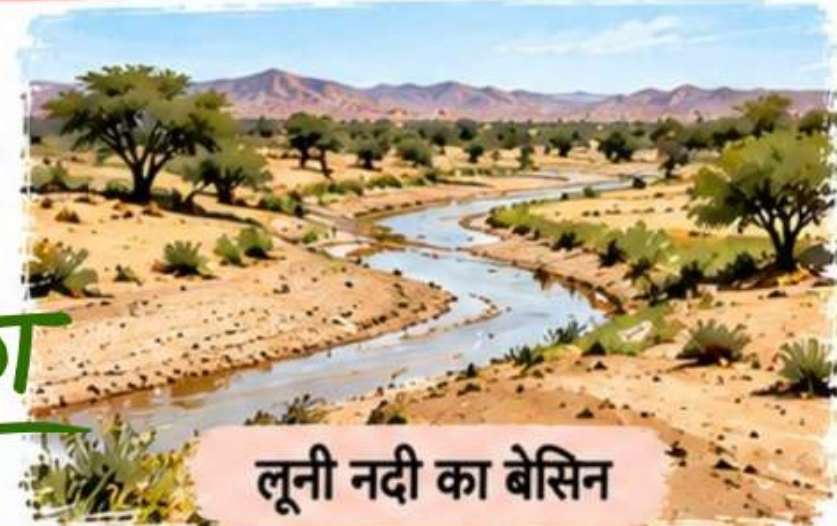


लघु मरुस्थल का धरातल

4. अर्द्ध-शुष्क प्रदेश (Semi-Arid Region)

- यह अपेक्षाकृत कम शुष्क क्षेत्र है, जिसमें मुख्य रूप से लूनी नदी का बेसिन और शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनू, चुरु) शामिल हैं।

रैग



लूनी नदी का बेसिन

शुष्क रेतीला मरुस्थल

1. बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश

41.50%

पथरीला/चट्टानी मरुस्थल → हम्माद

हम्माद ✓

रेग → मिश्रित मरुस्थल

लाठी सीरिज़ → भूगर्भिक जल पट्टी

बालुका स्तूप युक्त प्रदेश

58.50%

इर्ग → शुष्क रेतीला मरुस्थलअनुदैध्य बालुका स्तूपअनुप्रस्थ बालुका स्तूपबरखानविभिन्न बालुका स्तूप व प्लाया

शुष्क रेतीला मरुस्थल

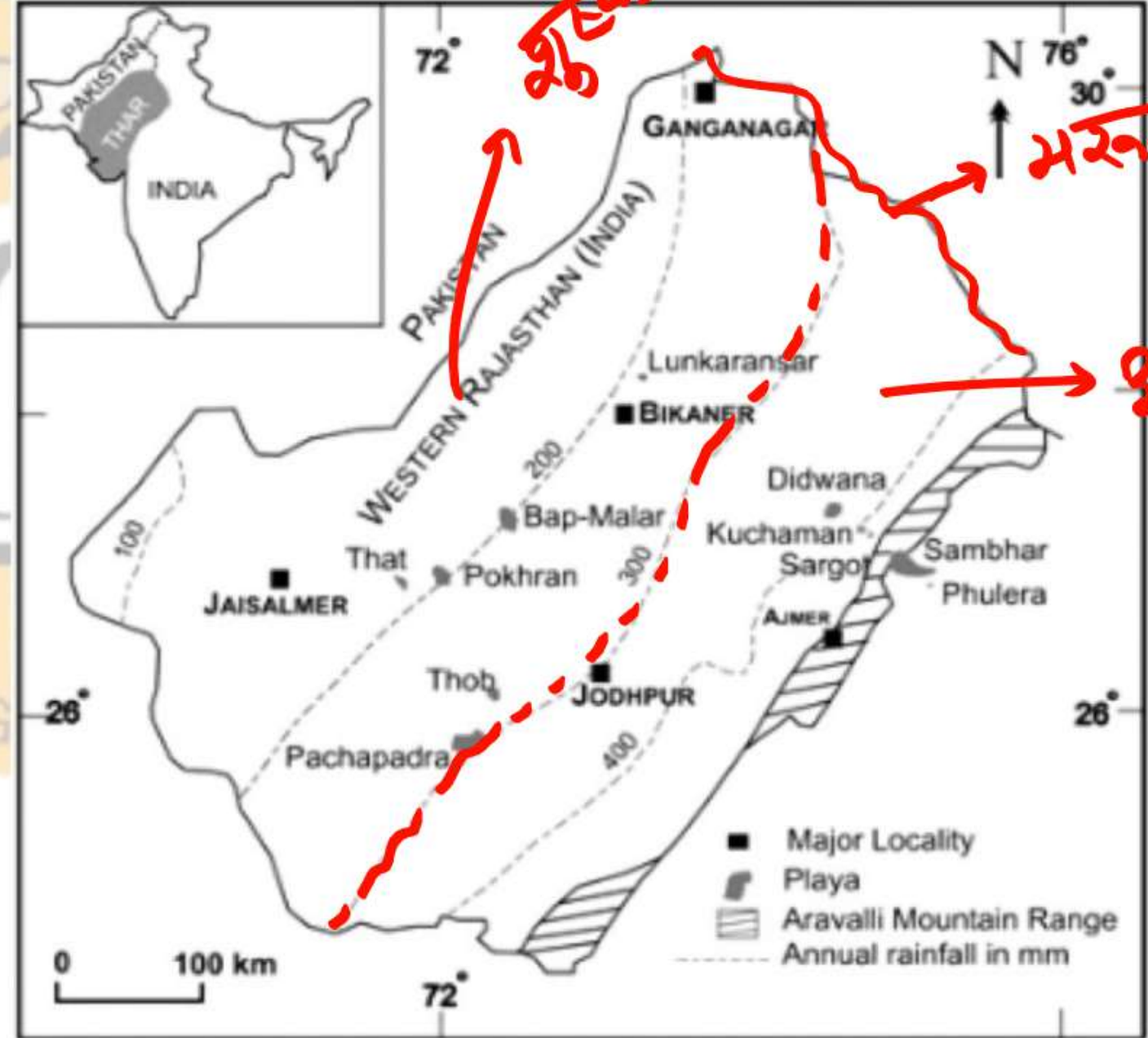
बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश

41.50%पथरीला/चट्टानी मरुस्थल

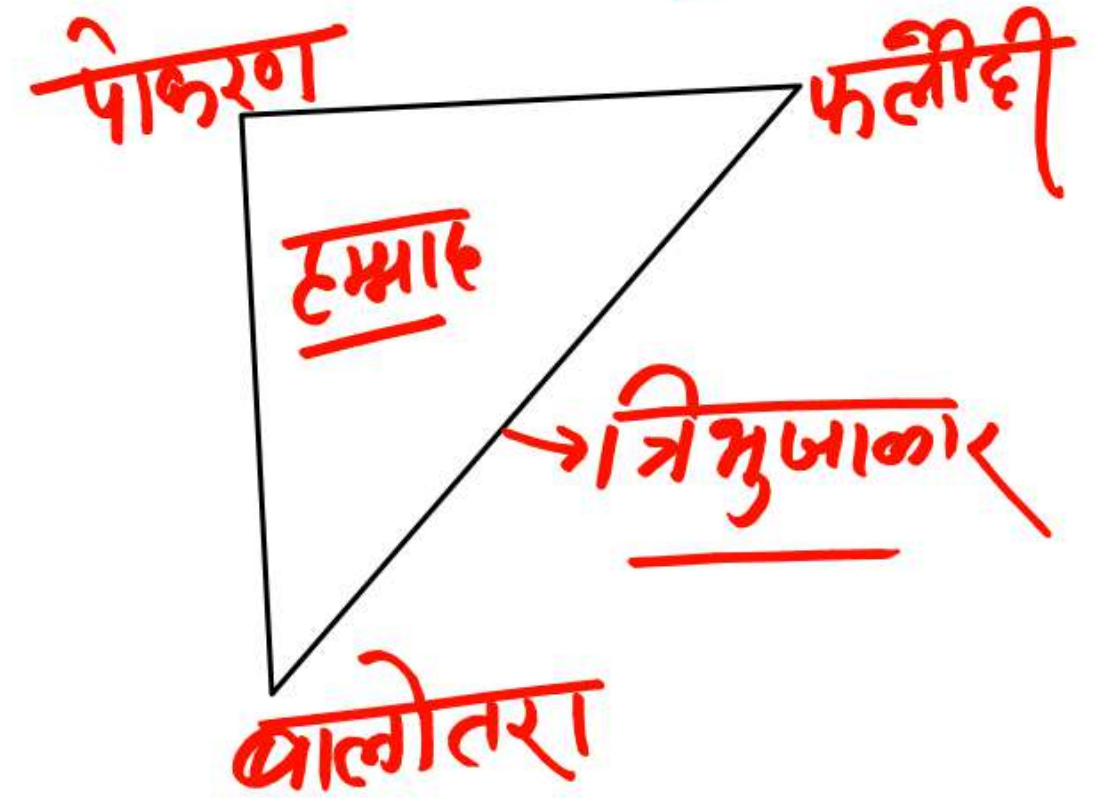
हम्माद

रेग

लाठी सीरिज़



- चट्टानी मरुस्थल/हम्माद → पोकरण, कलीदी और बालोतरा के मध्य त्रिभुजाकार पथरीला मरुस्थल।



- SEEZ → Solar Energy Enterprises Zone

JJB → जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर

- नखलिस्तान/ओएसिस/मिराज

→ मरुस्थल में पाये जाने वाला वनस्पति क्षेत्र नखलिस्तान के रूप में जाना जाता है।

गौरव सिंह धागेराव सर द्वारा अनूठी मुहिम ... हर सुबह की शुरुआत GGD FACTS के साथ ...



FACTS 272

लाठी सीरीज

पाकिस्तान देश के सहारे जैसलमेर ज़िले में पोरण से मोहनगढ़ तक अवसादी चट्टानों का समूह पाया जाता है सन् 2007में काजरी के वैज्ञानिकों को यहाँ 80 मीटर लम्बी तथा 60 मीटर चौड़ी पृथ्वी के अन्दर बहती हुई जलधारा प्राप्त हुई जिसे उन्होंने 'भूगर्भिक जलपट्टी/ लाठी सीरीज' के नाम से पुकारा।



जैसलमेर में स्थित जल पट्टी सरस्वती नदी (घग्घर नदी) का भूगर्भिक अवशेष है।

यहां सेवण घास (लसियुरिस सिडीकुस) पाई जाती है जिसके उपनाम - करड़ी, तरडगम, मुराला। इस सेवण घास पर राज्य पक्षी गोड़ावण अण्डे देता है, इसलिए सेवण घास को 'गोड़ावण पक्षी की प्रजनन स्थली' भी कहते हैं।

लाठी सीरीज के नजदीक जैसलमेर जिले की सम तहसील के चांदन गांव में एक नलकूप खोदा गया जहा पर कम गहराई से ही 2.30 लाख लीटर प्रति घंटे मीठा जल निकाला जाता है, इसी कारण चांदन गाँव के नलकूप को 'थार का घड़ा/चांदन नलकूप' कहते हैं।

लाठी सीरीज में मुख्यतः रॉक फॉस्फेट खनिज पाया जाता है। लाठी सीरीज थार के मरुस्थल में पारिस्थितिकी संतुलन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

थार रेगिस्थान का जलमहल - बाटाडू का कुआं निर्माण - गुलाब सिंह

विशेष - यह संगरमर से निर्मित है वर्तमान में यहा पर केयर्न कंपनी द्वारा पानी को 'RO Filtered' करके 'Water ATM' के जरिये भी उपलब्ध करवाया जा रहा है।

सहयोगकर्ता - समनिवास सोलंकी



“Join Our Official TELEGRAM CHANNEL,”



TO Get NEW UPDATES !



- New Job Alerts
- Academic News
- Class PDFs
- Practice MCQ Questions & Many More

@<https://t.me/gouravgyandhara>

Join Now!





JOIN THE
**FASTEST
GROWING
EDUCATION
PLATFORM**



निःशुल्क व नियमित शिक्षा देने में
राजस्थान का **न. 1 YOUTUBE CHANNEL**